



SHRI KAZI MASUM AKHTAR

Shri Kazi Masum Akhtar is an educator, a highly acclaimed debater, commentator, columnist and a crusader for social causes. He is presently, Principal of Katjunagar Swarnamayee Vidyapith (H.S.), Kolkata, Study Centre Coordinator of Rabindra Mukta Vidyalaya and National Institute of Open Schooling (D. El. Ed Course). He is noted for his contribution towards the eradication of obscurantist superstitious customs plaguing the society, particularly the Muslim society and thereby uplifting the underprivileged people.

2. Born on 18th August, 1970 in a Kazi family of village Basantapur, Amta, District Howrah, West Bengal, Shri Akhtar received his school education at Basantapur High School, graduated with Honours in History from Scottish Church College, Kolkata and obtained his Master's degree from Rabindra Bharati University. This was followed by a B.Ed from the University of Calcutta underlying his desire to choose the noble vocation of a teacher. He joined Roypur Narendranath Vidyamandir (H. S.) at Pathar Pratima, District 24 Parganas South. He next served as the Principal of Talpukur Ara High Madrasah, Metiabruz, Kolkata. As the Principal of Katjunagar Swarnamayee Vidyapith, he is still in the pursuit of his noble mission of education for more than twenty years.

3. Shri Akhtar was pained by the lack of modern education among the poor, especially the Muslims and other social ills. In Pathar Pratima with the help of the local women, he initiated a campaign against consumption of illicit country liquor and brought a large number of poor, first- generation learners in the fold of modern education. Committed to the ideals of national unity and communal harmony, as the Principal of a High Madrasah, he tried to introduce the singing of the National Anthem at prayer fusing true knowledge of Islam and patriotism. He also observed the birthdays of national icons like Shri Rabindranath Tagore and Swami Vivekananda. He encouraged girl students to participate in co-curricular activities like singing, dancing, acting and sports, which earned him the ire of the fundamentalist however his efficient administration had uplifted the academic standard of the said Madrasah.

4. As the Principal, Shri Akhtar has been the main force behind the development of Katjunagar Swarnamayee Vidyapith. The once sick school now boasts not only of increased roll strength but also modern amenities like- C.C.T.V. cameras, solar panels, garden, guest- room, library, gymnasium, etc. The students of the school have improved not only in academic performance but also in sports and cultural activities remarkably.

5. A zealous reformer and an ardent champion of gender equality, Shri Akhtar was at the forefront of the hapless Muslim women's fight against the arbitrary ‘ Triple Talaq’. Braving intense opposition and repeated threats, he has arranged seminars, discussions, dharna and press conferences, and written numerous articles to expose this evil custom. He along with a few like- minded persons has also submitted a memorandum to Hon’ble President, the Prime Minister and the Chief Justice of India with signatures of more than one lakh persons, mainly from the minority community. He has always taken a strong stance against marriage of minor girls and has personally intervened to stop many such marriages. He is also the serving President of Pragatisil Muslim Samaj and General Secretary of West Bengal Muslim Association. He is against all kinds of fundamentalism and believes in a United India. His other humanitarian activities include organizing relief for Aila cyclone victims and flood victims.

6. Shri Akhtar has never hesitated to speak out the truth on different issues and is a much sought after personality in electronic media. He wields the pen with the same brutal honesty and frequently writes columns in dailies including the leading Bengali language ones. His publications include titles like, 'Banchito Rakhar Sarojantra ' and 'Bipanno Sanskriti o Santrasbad'. He dwells on a plethora of social, religious, economic and minority issues in his works and talk shows on T.V. channels.

7. Shri Akhtar is the recipient of numerous awards and honours. In 2014, he received "Udaar Akash Smarak Samman" as a columnist. Ananda Bazar Patrika conferred the prestigious "Dronacharya Samman", 2016 on him in recognition of his achievements as Principal of the Year. In 2017, Shyama Prasad Mukherjee Study Circle appreciated his social reform initiatives with the "Shyama Prasad Samman". The same year, the Government of West Bengal conferred "Shiksha Ratna Sammanana" for life time achievement as one of best School Principals of the State.





श्री काज़ी मासूम अख्तर

श्री काज़ी मासूम अख्तर एक शिक्षक, प्रसिद्ध डिबेटर, टिप्पणीकार, स्तम्भ लेखक और सामाजिक हितों के लिए संघर्ष करने वाले व्यक्ति हैं। वर्तमान में, वह काटजूनगर स्वर्णमयी विद्यापीठ (उच्च विद्यालय), कोलकाता के प्राचार्य, रबीन्द्र मुक्त विद्यालय तथा राष्ट्रीय मुक्त विद्यालयी संस्थान (डी.ईएल.ईडी पाठ्यक्रम) के अध्ययन केन्द्र समन्वयक हैं। उन्हें समाज में, विशेषकर मुस्लिम समुदाय में फैली रूढ़िवादी और अंधविश्वास से जुड़ी प्रथाओं को समाप्त करने तथा वंचित लोगों के उत्थान में अपने योगदान के लिए जाना जाता है।

2. 18 अगस्त, 1970 को पश्चिम बंगाल के हावड़ा जिले के अमता के बसंतपुर गांव के एक काजी परिवार में जन्मे श्री अख्तर ने बसंतपुर उच्च विद्यालय से विद्यालयी शिक्षा प्राप्त की; स्कॉटिस चर्च कॉलेज, कोलकाता से इतिहास में ऑनर्स और रबीन्द्र भारती विश्वविद्यालय से स्नातकोत्तर उपाधि प्राप्त की। इसके बाद, शिक्षण के श्रेष्ठ कार्य की आकांक्षा को पूरा करने के लिए उन्होंने कोलकाता विश्वविद्यालय से बी.एड. किया। उन्होंने दक्षिण 24 परगना जिले के पत्थर प्रतिमा स्थित रायपुर नरेन्द्रनाथ विद्यामन्दिर (हाई स्कूल) में शिक्षण कार्य किया। इसके बाद, वह तालपुकुर आरा हाई मदरसा, मेटियाब्रूज, कोलकाता के प्राचार्य बने। वह, काटजूनगर स्वर्णमयी विद्यापीठ के प्राचार्य के रूप में, अभी भी बीस वर्षों से अधिक समय से शिक्षा के नेक कार्य में लगे हुए हैं।

3. श्री अख्तर ने गरीबों, विशेषकर मुस्लिमों में आधुनिक शिक्षा की कमी और अन्य सामाजिक बुराइयों को देखकर दुख महसूस किया। स्थानीय महिलाओं की सहायता से पत्थर प्रतिमा में, उन्होने देशी शराब के सेवन के विरुद्ध एक अभियान शुरू किया और बड़ी संख्या में गरीब, पहली पीढ़ी के शिक्षार्थियों तक आधुनिक शिक्षा का प्रकाश फैलाया। वह, राष्ट्रीय एकता और सांप्रदायिक सद्भाव के लिए प्रतिबद्ध रहते हैं। एक उच्च मदरसा के प्राचार्य के रूप में इस्लाम की सच्ची समझ और देशभक्ति की भावना पैदा करते हुए, उन्होंने प्रार्थना के दौरान राष्ट्रगान की शुरुआत करने का प्रयास किया। उन्होंने श्री रबीन्द्रनाथ टैगोर और स्वामी विवेकानन्द जैसी राष्ट्र विभूतियों की जयंती भी मनाई। उन्होंने छात्राओं को गायन, नृत्य, अभिनय तथा खेल जैसी गतिविधियों में भाग लेने के लिए भी प्रोत्साहित किया। इसके लिए उन्हें रूढ़िवादियों के कोप का भाजन बनना पड़ा। किंतु उनके कुशल प्रशासन ने उक्त मदरसे के शिक्षा के स्तर को ऊंचा उठा दिया था। एक बार फिर उन्होंने कभी न हारने की अपनी संकल्पशक्ति का परिचय दिया और पांच वर्षों की लम्बी लड़ाई के बाद अपने हमलावरों के विरुद्ध कानूनी लड़ाई में जीत हासिल की।

4. श्री अख्तर, प्राचार्य के तौर पर, काटजूनगर स्वर्णमयी विद्यापीठ के विकास के मुख्य प्रेरक रहे हैं। कभी जीर्ण–शीर्ण रहे इस विद्यालय में अब न केवल विद्यार्थियों की संख्या बढ़ी है बल्कि सीसीटीवी कैमरा, सौर ऊर्जा पैनल, बगीचा, अतिथि गृह, पुस्तकालय, व्यायामशाला आदि जैसी आधुनिक सुविधाएं भी हैं। इस विद्यालय के विद्यार्थियों ने न केवल शैक्षिक बल्कि खेल और सांस्कृतिक गतिविधियों में भी उल्लेखनीय प्रदर्शन किया है।

5. एक प्रखर सुधारक और स्त्री–पुरुष समानता के दृढ़ समर्थक, श्री अख्तर अन्यायपूर्ण 'तीन तलाक' के खिलाफ बेबस मुस्लिम महिलाओं की लड़ाई में अग्रणी रहे। जबरदस्त विरोध और लगातार धमकियों के बावजूद उन्होंने इस कुरीति को बेनकाब करने के लिए सेमिनारों, परिचर्चाओं, धरनों और प्रेस कांफ्रेंस का आयोजन किया और अनेक लेख लिखे। उन्होंने समान विचार वाले कुछ और लोगों के साथ मिलकर एक लाख से अधिक लोगों के हस्ताक्षर ज्ञापन, जिनमें अधिकांश हस्ताक्षर अल्पसंख्यक समुदाय के हैं, माननीय राष्ट्रपति, प्रधान मंत्री और भारत के मुख्य न्यायाधीश को दिया। उन्होंने नाबालिग लड़कियों के विवाह का हमेशा जोरदार विरोध किया और ऐसे कई विवाहों को रोकने के लिए निजी हस्तक्षेप किया। वह प्रगतिशील मुस्लिम समाज के अध्यक्ष और पश्चिम बंगाल मुस्लिम एसोसिएशन के महासचिव भी हैं। वह सभी प्रकार की रूढ़िवाद का विरोध करते हैं और अखंड भारत में विश्वास करते हैं। उनके अन्य मानवतावादी कार्यों में आयला तुफान से प्रभावित लोगों और बाढ़ पीड़ितों के लिए सहायता शामिल है।

6. श्री अख्तर विभिन्न विषयों पर सच बोलने से कभी पीछे नहीं हटे और वह इलेक्ट्रोनिक मीडिया में एक लोकप्रिय व्यक्ति हैं। उनके लेखों में भी यही भावना व्यक्त होती है। वह बांग्ला भाषा के अग्रणी अखबारों सहित अन्य अखबारों में स्तम्भ लिखते हैं। उनके प्रकाशनों में 'बंचितो राखार सरोजंत्रा' और 'बिपन्नो संस्कृति ओ संत्रासबाद' शामिल हैं। वह अपने कार्यों और टीवी चैनलों के टॉक शो में सामाजिक, धार्मिक, आर्थिक और अल्पसंख्यकों से संबंधित कई मुद्दों पर अपने विचार रखते हैं।

7. श्री अख्तर को कई पुरस्कार और सम्मान प्राप्त हुए हैं। 2014 में उन्हें स्तम्भकार के रूप में "उदार आकाश स्मारक सम्मान" प्राप्त हुआ। आनन्द बाजार पत्रिका ने उनकी उपलब्धियों के लिए 2016 में उन्हें प्रिंसिपल ऑफ द ईयर के रूप में प्रतिष्ठित "द्रोणाचार्य सम्मान" से सम्मानित किया। 2017 में श्यामा प्रसाद मुखर्जी स्टडी सर्कल ने उनके सामाजिक सुधार कार्यों की प्रशंसा स्वरूप "श्यामा प्रसाद सम्मान" प्रदान किया। उसी वर्ष पश्चिम बंगाल सरकार ने राज्य के एक सर्वश्रेष्ठ विद्यालय प्राचार्य के रूप में आजीवन उपलब्धियों के लिए उन्हें "शिक्षा रत्न सम्मान" प्रदान किया।